

# स्कार्फ पर खिली रज़ा की कला

रवि जैन

मुम्बई। जल्द ही मशहूर चित्रकार सैयद हैदर रजा देशभर की 1200



चित्रकार रज़ा

उतरकर महिलाओं के लिए खासतौर से बनाये गये स्कार्फ पर स्थायित्व पा गये हैं।

अमूर्त चित्रकारी के लिए विश्वविख्यात एच. एस. रजा ने 'सत्या पॉल' जैसे प्रसिद्ध लेबल के विशेष कलेक्शन्स के लिए अपनी चार पेंटिंग्स को सिल्क के दो छोटे-बड़े आकारों में उतारा है। इस तरह वे ऐसे पहले चित्रकार बन गये हैं, जिन्होंने किसी परिधान डिजाइन करने वाले ब्रांड के साथ 'जुगलबंदी' कर इस तरह का अनोखा प्रयोग किया और अपनी पेंटिंग्स को किसी वस्त्र पर हूबहू उतारने की इजाजत दी।

तो आखिर कैसे संभव हुई यह

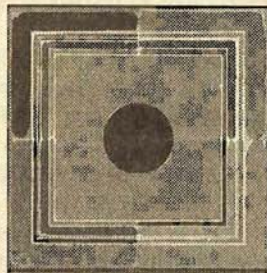
महिलाओं के फैशन स्टेटमेंट का हिस्सा होंगे। अब उनकी चार बेशकीमती पेंटिंग्स प्रदर्शनीयों के दीवारों से

'जुगलबंदी'? क्यों किया उन्होंने यह अनूठा प्रयोग? पूछने पर हाल ही में 100 साल पूरे कर चुके ताजमहल होटल के कॉफी शॉप में बैठे मृदुभाषी रजा कहते हैं, 'मैंने कभी भी बिक्री के लिहाज से चित्रकारी नहीं की। मैंने हमेशा चाहा कि मेरी पेंटिंग्स की पहुंच केवल सम्पन्न तबके तक ही न हो। ऐसे में 'सत्या पॉल' से जुड़े एक पुराने मित्र ने ऐसा सुझाव दिया। सुझाव पसंद आया और मैंने हां कर दी, लेकिन गुणवत्ता को प्राथमिकता देने की शर्त पर।

स्कार्फ पर उन्होंने जिन पसंदीदा पेंटिंग्स को पेश किया है, उनके नाम हैं— जर्मिनेशन I व II, अमरजीव और बिंदु। यह केवल मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता, हैदराबाद और जयपुर में 'सत्या पॉल' के आठ दुकानों पर बेचे जायेंगे और यह दो आकारों में उपलब्ध होंगे। हर पेंटिंग्स के स्कार्फ बराबर की मात्रा में 300 और सीमित होगा। यानी महज 1200। छोटे आकार के स्कार्फ की कीमत 8,000 रुपये रखी गयी है, जबकि बड़े आकार के स्कार्फ का दाम 12000 रुपये है।

सीमित संख्या और अधिक दाम के

संदर्भ में पूछे गये एक सवाल के जवाब में 'सत्या पॉल' के मार्केटिंग निदेशक संजय कपूर ने कहा, 'हम रजा की चित्रकारी को



व्यवसायिक रूप से इस्तेमाल नहीं करना चाहते। यही वजह है कि हमने पहले सिर्फ 1200 स्कार्फ की ही मंजूरी दी है।' कीमत के बारे में उनका कहना था, 'रजा की लाखों रुपये कीमत वाली पेंटिंग्स महज चंद हजार रुपये में खरीदना महंगा सौदा नहीं हो सकता।' गौरतलब है कि स्कार्फ पर नमूंदर उनकी हर पेंटिंग्स की कीमत 12 से 40 लाख रुपये के बीच आंकी गयी है।

दिलचस्प बात यह है कि असल को मात देने वाले नकल से बचने के लिए हर डिजाइन के स्कार्फ पर एक नम्बर दर्ज

होगा और स्कार्फ के साथ उसके असली होने का एक प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इसकी एक और खासियत यह होगी कि



रज़ा के चित्रों की विशेषताओं में से एक उनका ज्यामितिक होना है जो स्कार्फों की डिजाइन में सटीक बैठती है।

हर खरीदार महज एक स्कार्फ ही खरीद पायेगा, मगर आकर्षक ढंग से की गयी पैकिंग के साथ।

सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से स्नातक हुए, 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' के संस्थापकों में से एक और पिछले 52 सालों से फ्रांस में रह रहे 81 वर्षीय रजा बिंदु आधारित चित्रकारी के लिए जाने जाते हैं। महिलाओं के लिए स्कार्फ के बाद अब पुरुष परिधान की बारी? 'नहीं', हंसते हुए कहते हैं रजा, 'हां, शायद साड़ियां करूं क्योंकि आई लव वीमेन!'